पासबानों के परामर्श

पासबानों के परामर्श: पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ -

कक्षा #१:

I. पासबानों के परामर्श का परिचय।
II. सैद्धान्तिक परामर्श।

कक्षा #२:

III. परामर्श का अभ्यासः
    क. परामर्श की प्रतिभा।

कक्षा #३:

III. परामर्श का अभ्यासः (जारी।)
    ख. परामर्श के उपकरण।
IV. प्रभावशीली परामर्शः
    क. परामर्श को अधिक प्रभावशाली बनाने वाली विशेषताएं।
    ख. अक्षमा की जड़ को पहिचानना।

कक्षा #४:

IV. प्रभावशाली परामर्श: (जारी।)
    ग. परामर्श के उत्तम व तीव्र परिणाम प्राप्त करने के आठ तरीके।
    घ. परामर्श के क्षेत्र में बाइबल के दृष्टिकोण।
V. परिशिष्ट:
    क. विशेष समस्याओं के लिए परामर्श देना।

कक्षा #५:

V. परिशिष्ट: (जारी।)
    क. विशेष समस्याओं के लिए परामर्श देना: (जारी।)
    ख. परामर्श देने का अभ्यास।
        परीक्षा।

टिप्पणियाँ -

पासबानों के परामर्श: परीक्षा

इस पाठ्यक्रम की अन्य पाठ्यक्रमों के समान परीक्षा नहीं होगी। परीक्षा के दौरान विद्यार्थियों को "परामर्श अभ्यास" में से एक समस्या पर अपनी प्रतिक्रिया देने के लिए कहा जाएगा। (पृष्ठ २१३, २१४)

शिक्षक पाठ्यक्रम के अन्त में एक कक्षा की चर्चा में अगुवाई करने के लिए एक मामले का उपयोग करेगा। उसके बाद का, पाठ्यक्रम के अन्तिम आधे घण्टे में विद्यार्थी गण अन्य मामलों पर अपनी प्रतिक्रिया देगें। विद्यार्थियों को दोनों की मामलों का अध्ययन और उनके प्रति अपनी प्रतिक्रिया देने के लिए तैयार रहना चाहिए।

पासबानों के परामर्श

टिप्पणियाँ -

I. पासबानों के परामर्श का परिचय।

वचन का आधार:

यूहन्ना १०:३:५, "उसके लिये द्वारपाल द्वार खोल देता है, और भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं, और वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है। जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल चुकता है, तो उनके आगे आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे पीछे हो लेती हैं, क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं। परन्तु वे पराये के पीछे नहीं जाएँगी, परन्तु उससे भागेंगी, क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं पहचानतीं।"

क. पासबानों के परामर्श का आधार।

१. यीशु, अच्छा चरवाहा, अपनी भेड़ों को नाम लेकर बुलाता है।

२. भेड़ें उसके पीछे इसलिए हो लेती हैं क्योंकि वे उसकी आवाज़ को पहिचानती हैं।

३. यहां, पर हम चरवाहे और भेड़ के बीच में मज़बूत सम्बन्ध को देख सकते हैं। पासबान, जो एक चरवाहे के समान है, उनका भी सम्बन्ध ठीक ऐसा ही होता है।

४. पसबानों के परामर्श में यह अध्ययन का एक बुनियादी बिन्दु है।

क. भेड़ किसी परदेशी के पीछे नहीं जाएगी (अर्थात वह उसकी बात नहीं मानेगी)।

ख. अतः एक अच्छा परामर्शदाता (प्रभावशाली) पासबान, अपने लोगों को पहिचानता है और उसके लोगों को उसे जानने की अनुमति देता है।

चर्चा विषय

एक अगुवा होने के नाते, विशेषकर एक पासबान होने के नाते, क्या आप इस बात के लिए तैयार है कि आपके लोग आपको जानने पाएं? क्या आप अपने लोगों को जानने में समय देने के लिए तैयार हैं?

टिप्पणियाँ -

ख. एक आवश्यक समझः उत्तरदायी कौन है?

१. प्रेरणा और उत्तरदायित्व में एक अन्तर होता है।

क. पासबान सलाह और प्रेरणा प्रदान कर सकते हैं।

ख. लेकिन, जिस व्यक्ति को सलाह दी जाती है वह स्वयं अपने जीवन के लिए उत्तरदायी होता है।

२. दूसरे शब्दों में, पासबान को यह याद रखना चाहिए कि वास्तव में जिस व्यक्ति को सलाह दी जा रही है उसे बदलने के लिए इच्छुक होना चाहिए।

अपना उदाहरण लिखें:

ग. परामर्श के विभिन्न प्रकार।

१. परिवार।

२. विवाह।

३. विवाह -पूर्व परामर्श।

४. आर्थिक।

५. आत्म हत्या सम्बन्धी।

६. दुःखद परिस्थितियों सम्बन्धी/शोषण सम्बन्धी।

७. संकट।

८. जीवन के पहलू (उदाहरण के लिएः नये अभिभावक)

९. नैतिक असफलताएं।

१०. आदतें (मादक पदार्थ, नशा, अश्लीलता इत्यादि।)

टिप्पणियाँ -

घ. परामर्श के मामलों की संचिका कों संभाल कर रखें।

१. परामर्श के हर क्षेत्र की संचिका को संभाल कर रखें।

२. आप वर्तमान मामले में सहायता के लिए पिछले मामलों का उदाहरण दे सकते हैं।

ग. यदि आपने किसी युगल को (विवाह पूर्व) परामर्श दिया है तो आपके लिए अन्य किसी युगल को परामर्श देना सरल होगा। अनुभव का कोई विकल्प नहीं है।

घ. यदि आपके पास पिछले मामले में सहायता करने का ब्योरा है तब भी मामले परामर्श देना अधिक सरल रहेगा।

अपना उदाहरण लिखें:

II. परामर्श के सिद्धान्त।

क. धर्मी ठहराना।

१. सामान्य सेवकाई में, यह सत्य है कि धर्मविद्या को व्यवहारिक आधार की संरचना करनी चाहिए।

२. ठीक इसी प्रकार से, सैद्धान्तिक परामर्श या सलाह देने में भी सत्य है कि उसके आधार पर कार्य किया जाना आवश्यक है।

ख. बुनियादी सिद्धान्त।

चर्चा विषय

निम्नलिखित आरेख जोई क्लोबा और विलियम किरवान की ओर से एक नमूने का संयोजन है।[१] परामर्श के सिद्धान्त को समझने के लिए इस आरेख का अध्ययन करें व उस पर चर्चा करें।

पासबानों के परामर्श

टिप्पणियाँ -

१) आत्म-पर्यवेक्षण

२) आत्म-समझ

नीचे की ओर संबंधों की स्थिति"एक संबंध को बनाएं"

ऊपर व नीचे की ओर कार्यों की स्थिति "कामों को प्रोत्साहित करने के लिए संबंधों का इस्तेमाल करें।"

६) मूल्यांकन

५) तरीकों और योजनाओं का निर्माण करें

४) लक्ष्यों को निर्धारित करें

<u>सेवा</u>

(यूहन्ना ८:३२)

३) **समस्या की परिभाषा**

(लक्षण नहीं; जड़)

<u>अपने पन को बांटें</u>

लक्ष्यः भरोसा, सम्बन्ध बनाने के तरीकेः तरस (मरकुस ६:३४); देखभाल करना/रूची (मत्ती १०:२९); स्वीकृति यूहन्ना ८:११; समस्या के साथ अपने को जोड़ें इब्रानियों ४:१५,१६

भरोसा

आप कहां हैं? आपको क्या चाहिए (मरकुस १०:५१)

<u>कड़ी उन्नति और प्रेम के साथ सत्य का बखान</u>

लक्ष्यः चुनौतियां, सामना करने के तरीकेः वचनों का इस्तेमाल करें; आशा (मत्ती ११:२८-३०); सामना (मत्ती १८:१५); अंगीकार व पश्चाताप (लूका १९:८)

जोखिम

क्या आप वास्तव में बेहतर होना चाहते हैं? यूहन्ना ५:६

लक्ष्यः परामर्श प्राप्त करने वाले व्यक्ति की सहायता करें ताकि वह स्वयं अपने आपकी तथा भविष्य में दूसरों की सहायता कर सके।

तरीकेः वचन का उपयोग करेंः अपने अनुभवों का इस्तेमाल करें; गृह कार्य दें; (यूहन्ना ९:७); लक्ष्य निर्धारित करें (१तीमु ४:१२-१६); उकसाएं/ प्रोत्साहित करें (यूहन्ना ११:२३);सकारात्मक सोच का इस्तेमाल करें (मरकुस १०:२६,२७); प्रार्थना करें।

सुरक्षा

आप इसे कैसे कर सकते हैं? क्या आपको सफलता मिली है? (यूहन्ना ९:७ व मरकुस ८:२३)।

पासबानों के परामर्श

III. परामर्श देने का अभ्यास।

टिप्पणियाँ -

क. परामर्श की प्रतिभाएं।

१. सुनने की प्रतिभाएं।

क. हालांकि अधिकतर लोग सुनने में अच्छे नहीं होते हैं, प्रक्रियाओं में अलग अलग प्रकार सुनने के प्रारूप शामिल होते हैं।

१) सन्तुष्टि के लिए सुनना।

२) बल देने के लिए सुनना।

३) भाव व्यक्त करने के लिए सुनना।

४) ध्वनि के उतार चढ़ाव के लिए सुनना।

५) अमौखिक संकेतों को सुनना या समझना।

क) शारीरिक मुद्राएं।

ख) चेष्टाएं।

ग) तनाव।

ख. हम जितना बोल सकते हैं उससे लगभग पांच गुना ज्यादा सुन सकते हैं।

१) एक व्यक्ति की सुनने की क्षमता लगभग १२० शब्द प्रति मिनट हो सकती है।

२) हम में प्रति मिनट ६०० शब्द सुनने की क्षमता होती है।

ग. इसलिए प्रश्न यह हैः आप अतिरिक्त समय तथा या सुनने के लिए क्या करते हैं?

१) बहुत से लोग दिन में स्वपन देखते हैं।

२) बहुत से लोग सोचते हैं कि किस प्रकार से प्रतिउत्तर देगें (वे अपने सुनने की योग्यता को कम करते हैं)।

टिप्पणियाँ -

३) कई लोग अच्छे सुनने वाले होते हैं। वे बहुत सक्रिय श्रोता होते हैं।

क) वे अपना अधिकतर समय अमौखिक सुरागों को देखने में खर्च करते हैं (शारीरिक क्रियाएं, पद, इत्यादि)।

ख) वे बोलने की शैली और बोलने के भाव पर भी ध्यान लगाते हैं।

ग) सम्भवतः, वे सबसे अधिक आत्मिक बातों को लेकर अपना ध्यान केन्द्रिक करते हैं।

घ) जो पासबान एक प्रभावशाली परामर्श दाता होना चाहता है उसे एक प्रभावशाली श्रोता होना बहुत जरूरी है। (निम्न वचनों पर ध्यान दें भजन ३४:१५-१८; भजन ११६:१,२ और नीतिवचन १८:१३,१५)

कक्षा की गतिविधियांः

बच्चों को जोड़ों में आने के लिए कहें। एक विद्यार्थी जीवन के खराब अनुभव के बारे में बताएँ।

दूसरे विद्यार्थी सुनने का अभ्यास करे। वह कही गयी बातों में मौखिक, अमौखिक, आत्मिक सुरागों को उन बातों में ढूंढने का प्रयास करता है।

उसके बाद मुद्रा को बदल लें। एक जोड़े के साथ इस अभ्यास को समाप्त करने के बाद चर्चा करें कि श्रोताओं ने सुनकर क्या शिक्षा प्राप्त की।

२. प्रश्न पूछने की प्रतिभा।

क. एक सलाहकार के रूप में प्रश्न पूछना अत्यधिक उपयोगी प्रतिभा में से एक है।

ख. प्रश्न पांच प्रकार के होते हैं, इनमें से तीन सामान्य श्रेणी में आते हैं, जिनका इस्तेमाल पासबानों के परामर्श में किया जाता है।

पासबानों के परामर्श

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

निम्नलिखित आरेख में दिये गये पांच प्रकार के प्रश्नों पर चर्चा करें, जिसमें से लिखें हुए तीन प्रश्नों को उन प्रश्नों के लिए इस्तेमाल किया गया है।

आत्म-मूल्यांकन	आत्म-समझ	समस्या को परिभाषित करना
१. जानकारियों को एकत्रित करना: तब आपने क्या किया? २. स्पष्ट करने वाले प्रश्न: वह कैसे हुआ?	१. चिंतन करने वाले प्रश्न: आपने जानते थे कि आप गलत थे, लेकिन आपके पास उससे बचने का रास्ता नहीं था? २. जोड़ने वाले प्रश्न: क्या आप उस समय तक खुश थे....?	१. चुनौती पूर्ण प्रश्न: क्या आपने कभी अपने बेटे को गले लगाया? आपने अपने बेटे को आखिरी बार कब गले लगाया था?

कक्षा की गतिविधियां:

होने दें कि विद्यार्थी जोड़ा बना लें। एक विद्यार्थी पासबान की भूमिका निभाए।

दूसरा विद्यार्थी एक ऐसी परिस्थिति में परामर्श मांगने का नाटक करें जिसमें उसकी पत्नी के साथ उसकी कोई अनबन हो गयी हो।

पासबान ऊपर बताए गये पांच प्रकार के प्रश्नों में से प्रत्येक में से कम से कम दो या तीन प्रकार के प्रश्नों को अवश्य पूछे।

वे, स्थितियों को बदलते हैं। उसके बाद आपस में चर्चा करें कि आपने इस गतिविधी से क्या सीखा।

टिप्पणियाँ -

३. मुलाकात।

क. हमेशा मुलाकात को एक सुनिश्चित कथन के साथ प्रारम्भ करें जो किसी व्यक्ति से कहता हैः

१) मैं समझता हूं।

२) मैं सारी परिस्थितियों को जानता हूं।

३) मैं ने पूरी परिस्थिति को ध्यान से देखा है।

ख. जब भी किसी व्यक्ति से मुलाकात हो तो हमेशा वचन का इस्तेमाल करें (२तीमुथीयुस ३:१६)।

ग. दृढ़ रहें। विशेष मुद्दे पर बात करें। सीधी बात करें। जब किसी व्यक्ति से बात करने या उसे प्रोत्साहित करने का समय आता है तो सामान्य बातें करने या घुमा फिरा कर बातें करने से कोई लाभ नहीं होता।

घ. प्रोत्साहित करें तथा प्रतिउत्तर देने की अनुमति प्रदान करें।

कक्षा की गतिविधीः

प्रश्न पूछने के अभ्यास को दोहराएं। ऐसी परिस्थिति का निर्माण करें जिसमें समाधान की आवश्यकता हो। प्रश्न पूछने वाला व्यक्ति अब आमने सामने बात करने का समय निकाले। उसके बाद, साझा करें कि उस गतिविधि से क्या शिक्षा प्राप्त की गयी।

चर्चा विषय

अगले खण्ड में जाने से पहले, प्रश्न पूछते और सामना करते हुए उनकी सुनने की प्रतिभा से जुड़े किसी भी प्रश्न या टिप्पणी पर चर्चा करें।

ख. परामर्श में सहायक तत्व।

टिप्पणियाँ -

१. कार्यभार। (परामर्श प्राप्त करने वाले व्यक्ति को कार्यभार सौंपना)।

क. यूहन्ना ९:७ का अध्ययन करें।

ख. व्यक्ति को अपनी सहायता करने के लिए कुछ करने हेतू प्रोत्साहित करें जिससे यह साबित हो कि वह व्यक्ति वास्तव में सहायता प्राप्त करना चाहता है (उसे ज़िम्मेदार बनाएं)।

ग. कुछ लोग सहायता मांगने के लिए तो आते हैं लेकिन वे स्वयं अपनी मदद करने के लिए प्रयास करने में इच्छुक नहीं होते। वे कहते हैं कि वे बदलना चाहते हैं लेकिन उनके कामों से ऐसा प्रतीत नहीं होता है। ऐसे लोगों को कोई कार्यभार सौंपने से उन्हें अपनी समस्या को सुलझाने हेतू उचित कदम उठाने में सहायता मिलेगी।

घ. याद रखने वाली बातेंः

१) नियमित बने रहें। हर सभा के बाद उन्हें काम सौंपें।

२) जब तक कि वे दिया हुआ कार्य पूरा नहीं कर देते तब तक अगली सभा प्रारम्भ न करें। किसी प्रकार के किसी भी बहाने को स्वीकार न करें। केवल कह दें: हम अगली सभा को प्रारम्भ करने से पहले आपके गृह कार्य को समाप्त हो की प्रतीक्षा करेगें।

३) पहला कार्य संक्षिप्त तथा सरल होना चाहिए।

४) निर्धारित कार्य विशेष होना चाहिए। वह मूल्यांकन करने योग्य हो। एक लिखित कार्य सर्वदा उत्तम रीति से कार्य करता है।

५) निर्धारित कार्य से व्यक्ति को बदलाव की आशा मिलनी चाहिए। उदाहरण के लिए,यदि किसी व्यक्ति को अभिलाषाओं की वजह से समस्या होती है,तब उसे कुछ विशेष वचनों को पढ़ने का काम दिशा जा सकता है, इससे उस व्यक्ति को चुनौति व प्रोत्साहन मिलेगा।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

२. बाइबल।

क. परामर्श देते समय बाइबल पासबान का सबसे महत्वपूर्ण हथियार होना चाहिए (देखें २तीमु ३:१६)।

ख. ऐसे बाइबल का इस्तेमाल करना सहायक साबित होता है जिसमें समनुक्रमणिका व अनुक्रमणिका हो।

ग. बाइबल का इस्तेमाल निम्न कामों के लिए किया जा सकता हैः

१) सामना करने के लिए।

२) उपदेश देने के लिए।

३) सुधारने के लिए।

४) समझाने के लिए।

५) धार्मिकता की शिक्षा देने के लिए।

६) मन को नया करने के लिए।

७) आदतों को बदलने के लिए।

८) मनन करने के लिए।

९) शान्ति देने तथा प्रोत्साहित करने के लिए।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

३. पवित्र आत्मा।

क. यूहन्ना १६:१३-१५ के साशय पर ध्यान दें।

ख. अपेक्षा करें कि पवित्र आत्मा आपको प्रकाशन, समझ और परख प्रदान करेगा।

ग. आत्मा के वरदानों (अर्थात चंगाई, बुद्धि के वचनों, ज्ञान के वचन इत्यादि) के प्रगट होने के लिए प्रार्थना करें।

घ. पवित्र आत्मा से प्रार्थना करें कि वह आपको उस व्यक्ति के लिए सच्चा बोझ प्रदान करे।

ङ. याद रखें कि पवित्र आत्मा "परामर्शदाता" है (यूहन्ना १६:७; यशायाह ९:६)।

अपना उदाहरण लिखें:

४. प्रार्थना।

क. व्यक्ति के साथ प्रार्थना करें (मत्ती १८:१९; याकूब ५:१६)।

ख. व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें (१ शमूएल ७:५-११)।

टिप्पणियाँ -

५. भेजें। (उसे किसी दूसरे परामर्शदाता के पास भेजें)।

क. हो सकता है कि कई बार आपको ऐसा लगे कि आप किसी विशेष परिस्थिति में सलाह देने में सक्षम नहीं है। इन मामलों में, सबसे बुद्धि का काम यह है कि आप उस व्यक्ति को किसी और के पास सलाह के लिए भेज दें।

ख. उदारहण:

१) एक शारीरिक या एक मनोवैज्ञानिक मामला।

२) कोई एक विशेष समस्या जिसके विषय में आपको अधिक अनुभव नहीं है। हो सकता है कि आप किसी अन्य परामर्श दाता को जानते हैं जो उस क्षेत्र में निपुण है या जिसने ऐसी समस्याओं को सुलझाया है।

३) एक ऐसा मामला, जिसमें विपरीत लिंग के परामर्शदाता से सेवा लेना या किसी पुरूष का महिला को परामर्श देना उचित नहीं है।

अपना उदाहरण लिखें:

चर्चा विषय

निर्धारित कार्यो हेतू परामर्श के लिए इस्तेमाल किये जाने वाले हथियारों, बाइबल, पवित्र आत्मा, प्रार्थना, और दूसरे के पास भेजने के सम्बन्ध में किसी भी प्रश्न तथा टिप्पणियों पर चर्चा करें।

टिप्पणियाँ -

IV. प्रभावशाली परामर्श।

क. परामर्शदाता को अधिक प्रभावशाली बनाने वाली विशेषताएं (नीतिवचन का एक अध्ययन)।

१. जीवन की शुद्धता (नीतिवचन ४:१८,१९)।

२. गापेनीयता (नीतिवचन ११:१३)।

३. वचन को सही समय और सही तरीके से इस्तेमाल करना (नीति १५:२२,२३,२८)।

४. अच्छी तरह सुनने की प्रतिभा (नीति १८:१३,१५)।

५. निष्पक्षतावाद और परख (नीति १८:१७)।

६. समझ (नीति २०:५)।

७. ईमानदारी (नीति २४:२४-२६)।

८. गम्भीर रूचि और प्रेम (नीति २७:५)।

चर्चा विषय

क्या आप इन विशेषताओं का प्राप्त करने के लिए तैयार हैं ताकि आप एक प्रभावशाली परामर्श दाता बन सकें? कक्षा में प्रार्थना करने का मौका दें ताकि वे परमेश्वर से इन विशेषाओं को उनके जीवन में देने के लिए प्रार्थना कर सकें।

ख. अक्षमा की जड़ के सम्बन्ध में।

१. अक्षमा के परिणाम बहुत खतरनाक होते हैं। मत्ती ६:१४,१५ के अनुसार श्इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।

२. दूसरे व्यक्ति के प्रति क्षमा का अभाव प्रायः बहुत सी समस्याओं का कारण होता है। अनेकों बार, समस्या के लक्षण तो आसानी से नज़र आ जाते हैं लेकिन उस समस्या की जड़ छुपी हुई होती है। एक सामान्य जड़ अक्षमा होती है।

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

निम्नलिखित आरेख का अध्ययन करें और इसका उपयोग चर्चा और अनुप्रयोग हेतू करने के लिए करने हेतू प्रोत्साहित करें।

क्षमा का अभाव

अप्रसन्नता; कड़वाहट → घृणा; बैर → विद्रोह → उदासीनता; भावशून्यता → **क्षमा का अभाव**

ध्यान दें: इन सभी लक्षणों की जड़ प्रायः क्षमा का अभाव होती है। अन्तिम स्थिति (भावशून्यता) में किसी की सहायता करना बहुत कठिन होता है। व्यक्ति को क्षमा करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

ग. परामर्श[3] देने पर शीध्र और उत्तम परिणाम पाने के आठ तरीके।

१. जब कोई व्यक्ति भावनात्मक रूप में परेशान या विक्षिप्त हो तब उसे परामर्श देने से बचें। यह समय केवल सुनने तथा सात्वंना देने का है (नीतिवचन २५:२०)।

२. संक्षेप में समस्या का सार जानने का प्रयास करें (एक या दो वाक्यों में) (नीतिवचन १८:१७; २१:२)। इस तरीके से आप उन सारी विस्तृत व्याख्याओं से बच जाते हैं जो उस व्यक्ति ने आपको बहाना बनाते हुए सुनाई थीं।

३. तीन मुख्य समस्याओं की जड़ के प्रमाणों को खोजने का प्रयास करें (इब्रानियों १२:१५-१७):

क. कड़वाहट (क्षमा का अभाव)

ख. लालच।

ग. नैतिक अशुद्धता।

४. किसी भी चुनौति को एक प्रश्न के रूप में प्रस्तुत करें सीधे वाक्य के रूप में नहीं (नीतिवचन १५:१):

क. कहें, "क्या आप झूठ बोल रहे थे?"

ख. ऐसा न कहें, "तुम झूठ बोल रहे थे।"

टिप्पणियाँ -

५. समस्या के दो स्तरों को देखें (नीतिवचन १३:१८):

क. धरातल- यह एक "आदरणीय" समस्या होगी।

ख. जड़ – यह अधिक गम्भीर व अधिक शर्मिन्दा करने वाली समस्या होगी। वह व्यक्ति ज़मीनी समस्या के प्रति परामर्शदाता के प्रतिउत्तर का मूल्यांकन करेगा। यदि वह परामर्शदाता के प्रतिउत्तर से सहजता महसूस करता व उसमें भरोसा व अपनापन महसूस करता है तब वह परामर्शदाता को समस्या की जड़ तक जाने की अनुमति प्रदान करेगा। एक अनुभवी परामर्शदाता धीरज से उस व्यक्ति की बातों को सुनेगा और ठीक समय पर वह उस व्यक्ति से पूछेगाः इसके अलावा भी क्या आपको कोई और समस्या है?

६. मान लीजिए कि जो व्यक्ति समस्या लेकर आता है वही स्वयं सामान्यतः समाधान की प्रमुख कुंजी होता है (रोमियों २:१-३; और लूका १२:१३-१५)।

७. तुरन्त सलाह प्रदान करने की बजाय मिलने का समय निर्धारित करें (नीतिवचन २०:५)। यदि समस्या गम्भीर नहीं है या ज़मीनी समस्या है तब आपके पास उस समस्या को सुलझाने के लिए बहुत समय होगा।

८. मसीहियों के बीच में मुकद्दमों से बचने के लिए विशेष ध्यान देना चाहिए। एक परामर्शदाता होने के नाते आपको बाइबल आधारित बुद्धि और मेल मिलाप कराने वाली आत्मा का इस्तेमाल करना होगा (१ कुरिन्थियों ६:१-१०)।

घ. परामर्श के क्षेत्र में बाइबल आधारित दृष्टिकोण।

१. पुराने नियम के अनुसार परामर्श देना क्या है? (देखें व्यवस्था ११:१८,१९; नीतिवचन १५:२२; भजन संहिता ६४:२; नीतिवचन १:५ और नीतिवचन १२:२०)।

२. परामर्श के क्या लाभ हैं?

क. चिन्ता मुक्त करना और सहायता करना (नीतिवचन १२:१८,२५)।

ख. सुरक्षा और सन्तुष्टि प्रदान करना (नीतिवचन ११:१४)।

ग. योजनाओं को बनाने में सहायता करना (नीतिवचन १६:९; १९:२१; २०:१८)।

घ. बुद्धि पाने के लिए (नीतिवचान १२:५,१५; १३:१०; १९:२०)।

टिप्पणियाँ -

३. किस तरह के लोगों को परामर्श से कोई लाभ प्राप्त नहीं होता?

क. जो सत्य को अस्विकार कर देते हैं (नीतिवचन १०:१७)।

ख. जो केवल बोलते रहना ही चाहते हैं (नीतिवचन १८:२)

ग. जो पागल हैं और किसी तरह से बदलना नहीं चाहते (नीतिवचन १९:१९)।

घ. जो सत्य को तुच्छ जानते हैं (नीतिवचन २३:९)।

ङ. जो क्रोध या गुस्से में विवाद को नज़रअन्दाज़ करना चाहते हैं (नीतिवचन २९:९)।

च. जो समस्याओं और मुद्दों के प्रति कोई प्रतिक्रिया नहीं देना चाहते (नीतिवचन २९:१९)।

४. **याद रखें**: हमारे पास एक सहायक परामर्शदाता है जो हमेशा हमारे लिए उपलब्ध है (यशायाह ९:६)।

चर्चा विषय

परामर्श की बाधाओं, लाभों और उसके अर्थ से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के प्रश्नों और टिप्पणियों पर चर्चा करें।

टिप्पणियाँ -

V. परिशिष्ट।

क. विशेष समस्याओं में परामर्श देना।

१. शोक और विलाप में परामर्श देना।

क. विलाप करना नुकसान देने वाली परिस्थितियों की एक प्राकृतिक चंगाई है (उदारहण के लिएः जीवन के गुज़रने पर विलाप करना)। यह एक प्रक्रिया है जिससे किसी भी व्यक्ति को होकर गुज़रना आवश्यक है। यदि कोई व्यक्ति अपनी गहन भावनाओं को व्यक्त कर पा रहा है तो यह बहुत अच्छी बात है। परामर्शदाता व्यक्ति की इस परिस्थिति से होकर गुज़रने में सहायता कर सकता है।

ख. विलाप की स्थिति।

चर्चा विषय

निम्नलिखित आरेख पर अध्ययन और चर्चा करें।

स्थिति	अनुभूतियां व कार्य
संघर्ष पूर्ण स्थिति-नुकसान होना खोई हुई वस्तु को पुनः प्राप्त करने की जीव्र इच्छा सुव्यवस्था में कमी; पुनः संगठिन होने की निराशा; प्रतिस्थापन।	इनकार; उदासीनता; आलस्य गुस्सा; दर्द; दोष संघर्ष, झगड़ा; अनिश्चितता चंगाई; दूसरों के प्रति प्रेम

ग. परामर्श विलाप को प्रतिउत्तर देता है।

१) याद रखें कि विलाप कई वर्षों तक बना रह सकता है।

२) अगर कोई व्यक्ति अपनी कहानी को बार बार दोहराए तब भी उनकी बातों को ध्यान से सुनें। विलाप में किसी को सलाह देने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि आपका कुछ न बोलें केवल उनकी बातों को सुनें।

३) व्यक्ति को अपने गुस्से और अपनी गलतियों को व्यक्त करने का अवसर दें (चाहे आपके दृष्टिकोण से उसके द्वारा किया गया कार्य उचित प्रतिक्रिया न हो)। यह प्रक्रिया का ही एक भाग है। उस व्यक्ति के लिए अपने तनाव और उसकी शक्ति से स्वतन्त्र होने के लिए अपनी भावनाओं का व्यक्त करना अति आवश्यक है।

टिप्पणियाँ -

४) परिस्थिति का इस्तेमाल आत्मिक बातों पर चर्चा करने के लिए करें। बहुत से लोग नुकसान की भरपाई न होने की दशा में (जैसे कि मृत्यु, नौकरी का छिन जाना, सदस्यता का छिन जाना इत्यादि)।

५) विलाप के पहले वर्ष में व्यक्ति को उसके जीवन में किसी भी तरह का बड़ा निर्णय लेने या बदलाव करने ने मना करें।

घ. सावधान रहने वाले क्षेत्र।

१) ऐसा न कहेंः "रोएं मत"। वरन व्यक्ति को रोने की आज़ादी प्रदान करें। उस व्यक्ति के साथ रोएं।

२) यदि व्यक्ति किसी प्रिय जन की मृत्यु और नुकसान के तुरन्त बाद में अपने आप को सम्भाल नहीं पा रहा है तो उसकी ज्यादा चिन्ता न करें। उसे सांत्वना दे और उसकी सुरक्षा करें।

३) बच्चों को विलाप करने की प्रक्रिया से होकर गुजरने दें वरन उनकी मदद करें। किसी बच्चे को मृत्यु की सच्चाई से दूर रखना या उसके बदले कोई मनगड़न्त कहानी सुना देना बहुत खतरनाक है।

ङ. सामान्य सुझाव।

१) प्रारम्भ में, एक परामर्शदाता, किसी भी चीज़ से बढ़कर, उपस्थित होकर व सुनकर मदद कर सकता है।

२) अन्त में (इस दौर के समाप्त हो जाने के बाद), किसी भी चीज़ से बढ़कर, एक परामर्शदाता नुकसान को लेकर आत्मिक समझ प्रदान कर सकता है। परामर्श दाता परिस्थिति का इस्तेमाल करते हुए व्यक्ति को आत्मिक रीति से बढ़ने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है।

२. संकटपूर्ण परिस्थिति में परामर्श देना।

क. किसी व्यक्ति के द्वारा संकटपूर्ण स्थिति का नकारात्मक तरीकों से सामना करना।

१) समस्या के अस्तित्व से इनकार करना।

२) समस्या को नज़रअन्दाज़ करना।

३) सहायता से इनकार करना।

४) गुस्से और दोष भावना को छुपाना, इत्यादि।

टिप्पणियाँ -

५) संकट के बारे में विचार न करना। उसे भूलने का प्रयास करना।

६) व्यावहारिक समाधान पर ध्यान देने से इनकार करना।

७) दूसरों पर दोष लगाना या उनकी ओर से समाधान प्रदान करने की प्रतीक्षा करना।

८) दोस्तों और अभिभावकों को नज़रअन्दाज़ करना।

९) अपने आप को यह समझाना कि संकट परमेश्वर की ओर से दण्ड है।

ख. एक व्यक्ति द्वारा संकटपूर्ण स्थिति का सकारात्मक तरीकों से सामना करना।

१) स्वीकार करना कि वहां पर कोई समस्या है।

२) परिस्थिति को बेहतर ढंग से समझने का प्रयास करना।

३) मित्रों और माता-पिता की सहायता को स्वीकार करना, इत्यादि।

४) क्रोध और दोष भावना को स्वीकार करना इत्यादि। उनका समाधान करने की कोशिश करना।

५) कौन सी चीज़ें बदली जा सकती है और कौन सी नहीं के बीच में अन्तर पता करना। जिसे बदला नहीं जा सकता उसे मान लेना।

६) व्यावहारिक समाधानों पर ध्यान देना। समाधानों को लागू करने के लिए छोटे छोटे (प्रारम्भिक) कदमों को उठाना।

७) समस्या के लिए अपनी ज़िम्मेदारी को स्वीकार करना।

८) मित्रों और परिवार के लोगों से घनिष्ठता बनाना।

९) परमेश्वर की श्रेष्ठता पर ध्यान केन्द्रित करना तथा प्रार्थना करना।

टिप्पणियाँ -

३. विवाह सम्बन्धी परामर्श।

क. बहुत बार, अच्छी तरह से अपनी बात को न समझा पाने के कारण तलाक हो जाते हैं।

ख. विवाह में सुसंचार से सम्बन्धित निम्नलिखित निर्देश मिलकर एक मार्गदर्शिका को तैयार करते हैं। परामर्शदाता इन निर्देशों का इस्तेमाल दम्पतियों को प्रोत्साहित करने, चुनौति देने, तथा आपस में उनके बात रखने के तरीके को सही करने के लिए कर सकते हैं। इनमें से प्रत्येक निर्देश उन कार्यभारों के लिए आधार हो सकता है जो आप उन्हें परामर्श से बाहर एक साथ करने के लिए देते हैं।

१) सामान्य पद। (देखें नीति १८:२१; २५:११; अय्यूब १९:२; याकूब ३:८-१०; और १ पत. ३:१०)।

२) जीवन साथियों को आपस में एक दूसरे की बात को सुनना चाहिए। जब तक वह (पुरूष या स्त्री) अपनी बार पूरी न कर चुकी हो तब तक अपनी बात पूरी न कर चुके हों। (नीतिवचन १८:१३; याकूब १:१९)।

३) शब्दों पर लगाम लगी हो। बोलने से पहले सोचें। इस तरह बात करें कि आपकी बात दूसरों को समझ में आ जाए। (नीतिवचन १५:२३,२८; २१:२३; २९:२०; याकूब १:१९)।

४) दूसरे व्यक्ति को खिन्न करने के लिए चुप्पी न साधें। अगर आप चुप रहने वाले हैं तो उसका कारण अवश्य बता दें।

५) सदा सत्य बोलें। प्रेम से बातचीत करें। अतिशयोक्ति न करें (इफिसियों ४:१५,२५; कुलु ३:९)।

६) बहस न करें। बिना बहस किये हुए असहमत होना सम्भव है (नीति १७:१४; २०:३; १३:१ रोमियों ३; इफिसियों ४:३१)।

७) क्रोध के साथ कोई प्रतिक्रिया न दें। कोमलता से बात करें (नीतिवचन १४:२९; १५:१; २५:१५; २९:११; इफि. ४:२६, ३१)।

८) अगर आप गलत हैं तो स्वीकार करें और क्षमा मांग लें (याकूब ५:१६)।

टिप्पणियाँ -

९) जब कोई दूसरा व्यक्ति आप से क्षमा मांगेः क्षमा करें, और उसे भूल जाएं, और उसके बाद कभी उस बात का जिक्र न करें (नीति १७:९; इफिसियों ४:३२; कुलु ३:१३; १पतरस ४:८)।

१०) परेशान न करें (नीति १०:१९; १७:९; २०:५)।

११) आलोचना न करें। प्रोत्साहित करने वाले बनें (रोमियों १४:३; गलातियों ६:१; १थिस्सलुनीकियों ५:११; रोमियों १२:१७, २१; १ पतरस २:२३; ३:९)।

१२) दूसरे व्यक्ति की राय को समझने का प्रयास करें। उस राय में रूची दिखाएं (फिलि २:१-४; इफि ४:२)।

ख. परामर्श देने के अभ्यास।

परामर्श देने के एक मामले का उदारहण #१:

मारिया १३ वर्ष की है। वह कलीसिया की सदस्य है और आप पासबान हैं। हाल ही में, मारिया की दादी का देहान्त हो गया। वह अब आपके कार्यालय में आपसे परामर्श प्राप्त करने के लिए आयी है। वह कहती है, "मरना कैसा होता है?" वह इस प्रकार के सम्भवतः १२ अन्य प्रश्न पूछती है। और अन्त में वह कहती है कि मुझे नहीं पता कि "मुझे नहीं पता कि मेरी दादी को क्या हुआ। मृत्यु मुझे दुःखी करती है, लेकिन साथ ही साथ यह मुझे अपनी ओर आकर्षित भी करती है। कई बार मैं इससे डर जाती हूं। क्या मुझे कोई समस्या है?"

१. मारिया को किस प्रकार की मदद की ज़रूरत है?

२. आपके विचार से क्या उसे कोई गम्भीर समस्याएं हैं जो अभी तक प्रगट नहीं हुई हैं?

३. इस मुलाकात में आप क्या करने की कोशिश करेगें?

४. आप उसे कि प्रकार का कार्यभार सौंपेगें?

टिप्पणियाँ -

परामर्श देने के एक मामले का उदारहण #२:

जॉन और बैटी कलीसिया में एक विवाहित दम्पत्ति हैं। आप वहां के पासबान हैं। वे आपके पास परामर्श के लिए आते हैं। जॉन कहता है कि बैटी अब उसे प्रेम नहीं करती है। बैटी कहती है कि जौन अब उसका आदर नहीं करता है। जॉन कहता है, "मैं उसके लिए हर चीज़ का प्रबन्ध कराने का प्रयास करता हूं। मैं हर दिन कड़ी मेहनत करता हूं, और उसके बदले में मुझे क्या मिलता है?" बैटी बोलना शुरू करती हैः "मेरे लिए यह बहुत कठिन है।" वह बीच में ही टोक देती है। जॉन चिल्लाता है,"पूरे दिन घर में बैठे रहना कोई कठिन काम नहीं है।" इस प्रकार की बहस तब तक चलती रहती है जब तक कि बैटी रोने नहीं लगती।

१. अब आप क्या करेगें?

२. आपके विचार से क्या उन लोगों के साथ एक एक करके व्यक्तिगत तौर पर बातें करना आवश्यक होगा?

३. वे किस प्रकार से एक उत्तम रिश्ता बनाना प्रारम्भ कर सकते हैं?

४. आप उनसे अभी क्या प्रश्न कर सकते हैं?

५. आप उन्हें किस प्रकार के कार्यभार सौंपेंगे?

पासबानों के परामर्श

पासबानों के परामर्शः अन्तिम टिप्पणियाँ

टिप्पणियाँ -

[१] कक्षा की टिप्पणियां, रीजेंट विश्वविद्यालय, १९८६। आरेखों को जोई क्लोबा द्वारा विकसित विचाराधाराओं से लिया गया है, जो रीजेंट विश्वविद्यालय में शिक्षा के क्षेत्र में आचार्य हैं। आरेखों के अन्य हिस्से विलियम किरवान के परामर्श के नमूने (चित्र २३) मसीही परामर्श के बाइबल आधारित विचार (बेकर, १९८३) में से लिया गया है।

[२] डॉ.जोसफ उमीडी की शिक्षाओं "पासबानों के परामर्श" रिजेण्ट विश्वविद्यालय, से अनुमति द्वारा लिया गया है"।

[३] "इन्सटीट्यूट इन बेसिक यूथ कॉनफ्लिक्ट्स" १९७९ से लिया गया है।

पासबानों के परामर्श

टिप्पणियाँ -